The Sameeksha (समीक्षा) Global: A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 2, Issue 2 - 2018

माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थिओं का सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति के परिप्रेक्ष्य में शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

अभिषेख कुमार पाण्डेय*

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी देश के विकास का आधार होता है। इसके द्वारा न केवल कुशल मानव संसाधन का निर्माण होता है, बल्कि देश के विकास के लिये योग्य नागरिक का निर्माण भी होता है। किसी भी बालक का शैक्षिक विकास उसके जन्मजात गुणो एव पर्यावरणीय दशाओं दोनों से प्रभावित होता है। हम बालक के जन्मजात क्षमताओं में परिवर्तन नहीं कर सकते है, किन्तु उसे बेहतर विद्यालयों एवं घरेलू वातावरण उपलब्ध कराकर उसे अन्तर्निहित क्षमताओं का सर्वोत्तम विकास किया जा सकता है। प्रत्येक समाज में विभिन्न स्थिति रखने वाले वर्ग पाये जाते है। स्थितियों के उतार–चढाव का क्रम चलता रहता है और इसी आधार पर विभिन्न वर्गो का निर्माण होता है। एक वर्ग के व्यक्ति अपने को दूसरे वर्ग के व्यक्ति से श्रेष्ठ समझते है जबकि समाज में प्रत्येक वर्ग के व्यक्ति एक दूसरे पर निर्भर रहते है।

समाज एक व्यक्ति को चार वर्गों में बॉट दिया है। जो आज अलग–अलग वर्ग के नाम से जाना जाता है। शिक्षा का स्तरीकरण से गहरा सम्बन्ध है। समाज में ब्राह्मण वर्ग को अध्ययन अध्यापन, वेद पाठ आदि कार्य दिये गये थे। क्षत्रियों का कार्य देश की रक्षा कार्य सम्पन्न करना था। वैश्य समाज के लोगों को भरण पोषण का कार्य कृषि एवं व्यापार द्वारा करने की जिम्मेदारी रहती थी। शूद्रों को कर्तव्य समाज को विभिन्न प्रकार की सेवायें प्रदान करनी थी। समाज में प्राय: निम्न वर्ग अथवा माध्यम वर्ग का बालक शिक्षा इस कारण ग्रहण करता है कि जिससे शिक्षित होकर वह अपना वर्ग ऊँचा कर सके। उच्च वर्ग इस कारण शिक्षा ग्रहण करता है कि वह अपने पद व सम्मान को स्थायित्व प्रदान कर सके। कोई भी देश प्रौद्योगिकी व तकनीकी की शिक्षा में विकास इसलिये करना चाहता है, जिससे वह अपने स्तर को ऊंचा उठा सके। बढ़ती हुयी प्रौद्योगिकी शिक्षा द्वारा इस शिक्षा का विकास हो रहा है शिक्षा के नये–नये आयाम खुल रहे है। शिक्षा के द्वारा बालक के अन्दर वर्ग चेतना उत्पन्न की जाती है जिसका परिणाम यह होता है कि बालक अपने सामर्थ्य का विकास करते हुये उच्च वर्ग प्राप्त करने हेतु प्रयत्नशील रहता है। इसके साथ ही हम कह सकते है कि सामाजिक स्तरीकरण का प्रभाव भी हमारी शिक्षा पर पडता है।

शिक्षा या विद्या की प्राप्ति की परम्परा भारत में प्राचीन काल से हो रही है। सभ्यता के विकास के साथ–साथ भारतीय परिस्थितियां भी बदलती गयी। आज भारत विकासशील एवं लोकतान्त्रिक देश के रूप में अपना सशक्त अस्तित्व लिये हुये है। अपने बहुमुखी विकास अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव आर्थिक विकास, सामाजिक विकास के कारण भारतीय विश्व को अपना लोहा मनवा रहे है। आज पूरे देश में भारतीय मानव संसाधन की मांग है। 2050 तक भारत विश्व की सबसे बड़ी अर्थ व्यवस्था वाला देश होगा।

*शोधकर्ता, शिक्षक शिक्षाशास्त्र, नेहरु ग्राम भारती, डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी, इलाहाबाद।
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-401X**

अतः भारत को अपने भावी चुनौतियों को स्वीकार करते हुऐ दक्ष मानव संसाधन का निर्माण करना होगा। यह एक निर्विवाद सत्य है कि शिक्षा किसी भी राष्ट्र या समाज का भविष्य उसके द्वारा हासिल किये गये शैक्षिक स्तर पर निर्भर करता रहता है। किसी भी व्यक्ति, समाज या देश या क्षेत्र के सुनिश्चित एवं सन्तुलित विकास के लिये शिक्षा महत्वपूर्ण साधन होती है। बालक देश का संसाधन है आज के वैश्वीकरण के युग में ज्ञान ही शक्ति है। अतः आवश्यक है कि सार्वभौमिकरण की प्रक्रिया से संक्रमित बाजार में अपना अस्तित्व बनाये रखा जा सके। इसके लिए आवश्यक है कि वैश्विक मानकों को दृष्टिगत रखते हुये शैक्षिक उपलब्धि सुनिश्चित किया जा सके। जहां शैक्षिक प्राप्तिफल को शैक्षिक उपलब्धि के मानार्थी माना जाता है जो कि एक निश्चित कालावधि में अध्ययन एवं मूल्यांकन से प्राप्त आंकिक मान है। परन्तु एक बड़े समुदाय में जब इस आंकिक मान का निरीक्षण किया जाता है तो इसमे विभिन्नता दिखाई देती है, तब एक चिन्तन योग्य निरीक्षण योग्य प्रश्न आता है। आखिर इस आंकिक मान में अन्तर क्यों है।

शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर के लिये मनोवैज्ञानिक कारक–बुद्धि–लब्धि अभिक्षमता अधिगम अभिप्रेरणा एवं सम्प्राप्ति की दर पर एवं दृष्टिकोण आदि कारक हो सकते है यदि इस कारकों को नियंत्रित कर लिया जाय तो इस स्थिति में परिवार की शिक्षा, सामाजिक स्तर, व्यवसाय,आय मूल्य एवं अन्य पर्यावरणीय कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है जिनको एक संकेत के रूप में सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति का कारक मान सकते है।

इस शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर क्यों है? इस शैक्षिक उपलब्धि की भिन्नता में मनोवैज्ञानिक कारक, बुद्धि लब्धि, अभिक्षमता अधिगम अभिप्रेरणा एवं सम्प्राप्ति की दर एवं दृष्टिकोण आदि कारक हो सकते है। क्योंकि बुद्धि याद करने की क्षमता है। शब्दों संकेतो को अर्जित करने की क्षमता है अभिक्षमता व्यक्ति की वह वर्तमान क्षमता है जिसमें यदि व्यक्ति को प्रशिक्षण दिया जाय तो वह भविष्य में श्रेष्ठता को प्राप्त करने योग्य हो जाता है। अभिप्रेरणा स्वयं में व्यक्ति की दर को बढ़ाती है। अर्थात् शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में इन मनोवैज्ञानिक कारकों बुद्धि लब्धि अभिक्षमता, अधिगम अभिप्रेरणा आदि को नजर अन्दाज नहीं किया जा सकता है, परन्तु यदि इन कारको को नियंत्रित कर किया जाय तो उस स्थित में परिवार की शिक्षा स्थिति, व्यवस्था सहायता व्यवसाय पारिवारिक सदस्यों की अपेक्षाएं मूल्य आदि सन्निहित हो जाते है, जो महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है, जिन्को एक संकेत के रूप में सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति की पहचान दे सकते है।

किसी अध्ययन से पूर्व यह जानना आवश्यक है कि उस विषय के सन्दर्भ में पहले उपलब्ध ज्ञान का निरीक्षण किया जाय। इन्हीं सिद्धान्तों को ध्यान में रखकर भारतीय साहित्य और विदेशी शोधो का अध्ययन किया गया। इन अध्ययनों में माता–पिता की शिक्षा परिवार का आकार, अभिभावकों द्वारा प्रदान की गयी शैक्षिक सामग्री अभिभावकों के व्यवसाय भिन्नता, बच्चो के पढ़ने के लिये उपलब्ध साधनों का शैक्षिक उपलब्ध पर प्रभाव का अध्ययन किया गया, किन्तु ग्रामीण एवं नगरीय स्थिति के आधार पर सामाजिक आर्थिक स्थिति एवं उपलब्धि पर ध्यान नहीं दिया गया है।

शोध अध्ययन का तर्काधार

बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में भिन्नता अवश्य पायी जाती है। यह भिन्नता मनोवैज्ञानिक कारको, बुद्धि अभिक्षमता, विषय के प्रति दृष्टिकोण अधिगम इत्यादि के कारण हो सकती है, यदि इन कारको को नियंत्रित

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

कर लिया जाय तो भी बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक भिन्नता दिखाई देती है। यह सार्थक भिन्नता विद्यालय के वातावरण बालकों की सामाजिक आर्थिक स्थिति का भी प्रभाव पड़ता है क्योंकि बच्चे अपने परिवार आस–पास के लोगों एवं पड़ोस के वातावरण के साथ बिताता है, इसलिये सामाजिक आर्थिक स्थिति उसके सामाजिक शारीरिक, मनोवैज्ञानिक तथा नैतिक विकास को प्रभावित करते है। सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति एक बृहद सम्प्रत्यय है जिसके अन्तर्गत मानव पर्यावरण के सभी वस्तुये आती हैं जो प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से मानव जीवन को प्रभावित करती है। यह भिन्नता मनोवैज्ञानिक कारको; बुद्धि अभिक्षमता, विषय के प्रति दृष्टिकोण, अधिगम दर आदि के कारण हो सकती है, परन्तु इन कारको का नियंत्रित कर लिया जाय तो भी बालको की उपलब्धि में सार्थक भिन्नता दिखाई देती है। यह सार्थक भिन्नता बालकों के विद्यालयीय वातावरण के मानव संसाधन के रूप में उपलब्ध है।

इन प्रकार बालकों के घरेलू पर्यावरण एवं विद्यालयीय पर्यावरण सम्मिलित रूप से शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते है। अतः इस लघु शोध प्रबन्ध में इन्हीं कारकों को विदेशी और भारतीय शोध का निरीक्षण करके रिक्त ज्ञान के रूप में पहचाना गया है। यह कारक बालक की शैक्षिक उपलब्धि को निश्चित रूप से प्रभावित करते हैं। इस प्रभाव को बालकों की उच्चतम व निम्नतम शैक्षिक उपलब्धि के रूप में आसानी से देखा जा सकता है, साथ ही इसका सैद्धान्तिक विश्लेषण भी किया जा सकता है। इसप्रकार की पारिस्थितियों में भिन्नता का अध्ययन शैक्षिक प्रशासन एवं नीति निर्माताओं के लिये आवश्यक दायित्व होता है। इस दायित्व एवं आवश्यकता की पूर्ति अनुसंधान निष्कर्षों एवं शैक्षिक निहितार्थ से होती है। जो कि शिक्षण सिद्धान्तो एव नीतियो मे आवश्यक एव उपयुक्त परिवर्तन लाते है। यह परिवर्तन समस्त समाज के विकास के प्रमुख आधार होते है, जिससे समाज अपने उत्कर्ष को प्राप्त करने में सफल होता है, तथा एक सांतुलन भी बनाये रखता है।

वस्तुतः उपर्युक्त सभी पक्षों का समालोचनात्मक अध्ययन करने के बाद अनुसंधानकर्ता द्वारा भी समाज के विकास का आधार मानव संधान अर्थात् बालकों की शैक्षिक उपलब्धि के रूप में पहचानी गयी और इस शैक्षिक उपलब्धि अन्तर में परिवार के कौन–कौन कारक सन्निहित होते है क्योंकि इन कारको के अध्ययन के बिना हम शैक्षिक भिन्नता का वस्तुनिष्ट अध्ययन नहीं कर सकते अतः लघु शोधकर्ता ने इन्हीं तथ्यों का सैद्धान्तिक निरीक्षण किया तथा अध्ययन की समस्या का रूप दिया गया।

सामरया कथन

"माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति के परिप्रेक्ष्य में शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन"

शोध की मान्यताएं

1. सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति का 10वीं कक्षा के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है।
2. शोध प्रश्नावली द्वारा प्राप्त सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति वास्तविक सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति को प्रदर्शित करता हूँ।
3. वार्षिक परीक्षा का प्राप्तांक विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रदर्शित करता है।

शोध के उद्देश्य

शोध अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार है–

- सी0बी0एस0ई0 व यू0पी0 बोर्ड द्वारा संचालित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा–10 के विद्यार्थियों के शैक्षिक

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

उपलब्धि पर उनके सामाजिक, आर्थिक प्रस्थिति के प्रभाव का अध्ययन करना।

- सी0बी0एस0ई0 व यू0पी0 बोर्ड द्वारा संचालित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयो के कक्षा–10 के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर उनके लैगिंक प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- सी0बी0एस0ई0 व यू0पी0 बोर्ड द्वारा संचालित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा–10 के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर उनके जाति प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- सी0बी0एस0ई0 व यू0पी0 बोर्ड द्वारा संचालित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 10 के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर उनके धर्म के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- सी0बी0एस0ई0 व यू0पी0 बोर्ड द्वारा संचालित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा–10 के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर उनके आवास निवास स्थान के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- सी0बी0एस0ई0 व यू0पी0 बोर्ड द्वारा संचालित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा–10 के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर उनके विषय वर्ग के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- सी0बी0एस0ई0 व यू0पी0 बोर्ड द्वारा संचालित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा–10 के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर उनके परिवार प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- सी0बी0एस0ई0 व यू0पी0 बोर्ड द्वारा संचालित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा–10 के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर उनके विद्यालयों के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- सी0बी0एस0ई0 व यू0पी0 बोर्ड द्वारा संचालित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा–10 के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर उनके विद्यार्थियों के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएं

समाज विज्ञान के अध्ययन में परिकल्पना का महत्वपूर्ण स्थान होता है क्योंकि परिकल्पना केवल आँकड़ो के संकलन में ही सहायक नहीं होती बल्कि अध्ययन को भी दिशा प्रदान करती है। परिकल्पना के आधार पर सम्पन्न अध्ययन वैज्ञानिक आधार पर प्राप्त करता है।

परिकल्पना के सम्बन्ध में *मैकगुइन* ने *(1983)* का कहना है "परिकल्पना दो या दो से अधिक चरों के संभावित सम्बन्धों का परीक्षण योग्य कथन है"

परिकल्पना एक अनुमान है जिसे अन्तिम अथवा अस्थायी रूप में किसी निरीक्षित तथ्य अथवा दशाओं की व्याख्या हेतु स्वीकार किया गया है एवं जिसके अन्वेषण को पथ प्रदर्शन प्राप्त होत है।"

मुख्य शोध परिकल्पना

वाराणसी जनपद के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में लिंग, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, जाति, परिवार, विद्यालय, निवास स्थान, विषय वर्ग, धर्म के परिप्रेक्ष्य मे अन्तर पाया जाता है।

शून्य परिकल्पना

इस अध्ययन की शून्य परिकल्पना इस प्रकार है–

- H_1 % माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सामाजिक–आर्थिक स्थिति के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- H_2 % माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में लैगिंक स्थिति के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-401X**

- H_3 % माध्यमिक विद्यालयो के विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि में जाति स्थिति के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नही है।
- II_4 % माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि में धर्म स्थिति के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- H_5 % माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि में आवास–निवास स्थिति के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- H_6 % माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि में विषय वर्ग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- H_7 % माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि में परिवारिक स्थिति के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- H_8 % माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि में विद्यालयों की स्थिति के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध संक्रियात्मक परिभाषाएं

किसी भी अध्ययन की समस्या के चयन के बाद समस्या मे प्रयुक्त शब्दों को परिभाषित करना महत्वपूर्ण कार्य होता है। प्रत्येक शब्द का बहुवीकीय अर्थ होना स्वाभाविक होता है।

- **सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति:** सामाजिक –आर्थिक प्रस्थिति के अन्तर्गत वे सभी कारक सम्मिलित किये जाते है जो औपचारिक या अनौपचारिक रूप से बालक की स्वयं अकांक्षा रूचि एवं स्वानुभाव के रूप में अन्तस्थल में स्थायो रूप धारण कर लेते है और बालक की समस्त क्रियाकलापों को मनोवैज्ञानिक रूप से प्रभावित करते है।
- **छात्र:** वाराणसी जनपद के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा–10 में अध्ययन करने वाले सभी छात्र व छात्राएँ।
- **शैक्षिक उपलब्धि:** शैक्षिक उपलब्धि का स्वरूप समय के साथ बदलता रहता है। वैदिक युगीन शिक्षा व्यवस्था को देखें तो उस समय शैक्षिक उपलब्धि का आधार मौखिक परीक्षा, कौशल परीक्षा हुआ करती थी। वर्तमान समय में शैक्षिक उपलब्धि को आकिक रूप से देखा जाता है। हालांकि अब उसके स्थान पर ग्रेडिंग प्रगाली शुरू हो गयी है प्रस्तुत लघु शोध में शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा–10 के विद्यार्थियों के वार्षिक परीक्षाफल के मूल्यांकन के प्राप्तांकों से है।

शोध का सीमांकन

इस शोध अध्ययन की निम्नलिखित परिसीमाएं है–

- प्रस्तुत शोध को वाराणसी जनपद के नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्र के सभी सरकारी, सहायता प्राप्त व गैर सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों तक सीमित किया गया है।
- प्रस्तुत शोध केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड व माध्यमिक शिक्षा परिषद, उ0प्र0 द्वारा संचालित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों तक सीमांकित किया गया है।
- प्रस्तुत शोध वाराणसी जनपद केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड व माध्यमिक शिक्षा परिषद उ0प्र0 द्वारा संचालित, सरकारी, सहायता प्राप्त व गैर सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा–10 के विद्यालयों की सामाजिक, आर्थिक प्रस्थिति व शैक्षिक उपलब्धि तक सीमांकित किया गया है।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

सम्बन्धित साहित्य का तात्पर्य उन सभी प्रकार के पुस्तकों ज्ञात कोषों, पत्रों पत्रिकाओ, प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध प्रबन्धों एवं अभिलेखों आदि से है,जिनके अध्ययन से अनुसंधानकत्र को अपनी समस्या के चयन परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने में एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। इस प्रकार सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के बिना इस अनुसंधानकर्ता का कार्य सही दिशा में एक पग भी आगे नहीं बढ़ सकता है।

किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला के सामान है जिस पर सारा भासी कार्य आधारित होता है। यदि सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा इस नींव को दृढ़ नहीं कर लेते तो हमारे कार्य के प्रभावहीन एवं महत्वहीन होने का संभावना है अथवा यह पुनरावृत्ति भी हो सकती है' **–डब्ल्यू आर0 बोर्ज के अनुसार**

सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा निम्न कारणों से आवश्यक है–

- शोध कार्य की योजना बनाने में प्रारम्भिक पदों में से एक रूचि के अनुरूप विशेष क्षेत्र में किये गये शोध कार्यों की समीक्षा करता है। इस शोध को गुणात्मक विश्लेषण शोधकर्ता को एक दिशा संकेत देता है।
- प्रत्येक अनुसंधानकर्ता के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि वह दूसरों के द्वारा किये गये अपने समस्या के सम्बन्धित साहित्य की सूचनाओं से भली–भातिं अवगत है। वास्तविक योजना बनाने और अध्ययन करने में यह अत्यन्त महत्वपूर्ण समझा जाता है।
- यह अध्ययन की समस्या को साधन प्रदान करता है, शोध की समस्या का चयन करने और पहचानने के लिए समानता प्राप्त करता है। शोधकर्ता साहित्य के समीक्षा के आधार पर अपनी परिकल्पनाएं अध्ययन के लिए आधार प्रदान करता है। अध्ययन के परिणामों और निष्कर्षों पर वाद विवाद किया जा सकता है।

साहित्य समीक्षा व्याख्या की जाने वाली समस्या का पूर्ण स्वरूप प्रकट करता हैं उस क्षेत्र के साहित्य की समीक्षा के द्वारा क्षेत्र में ज्ञान विकसित किया जा सकता है।

सम्बन्धित साहित्य के श्रोत

इस उद्देश्य के लिये प्रयोग किये जाने वाले साहित्य के विभिनन साधन है। ये साधन मुख्यतया तीन भागों में विभक्त किये जा सकते है–

- **पुस्तकें और पाठ्य–पुस्तकों की सामग्री–** अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित सर्वाधिक उपयोगी पुस्तकों की सूची में होती है। विषय सूचक पुस्तकें बताती है कि पुस्तकें प्रेस में हैं अथवा छपने वाली हैं अथवा छपी हुई हैं। 'राष्ट्रीय संघीय नामावली' भी इस उद्देश्य के लिये उपयोगी है। बहुत से ऐसे प्रकाशन है जिनमें विशिष्ट सन्दर्भ पाये जाते है जो ज्ञान के विशिष्ट क्षेत्र के लिए पर्याप्त होते हैं। संचयी पुस्तक सूचांक प्रतिमास प्रकाशित होता है, सभी पुस्तकें अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित होती है।
- **समय–समय पर निकलने वाली पत्रिकार्ये–** समय–समय पर निकलने वाली पत्रिकाओं को एक प्रकाशन के रूप में परिभाषित किया जाता है जोकि क्रमबद्व भागों में प्राय: एक निश्चित अन्तराल के बाद तथा अनिश्चित काल तक चलते रहने के उद्देश्य से प्रकाशित होती है। इनके अन्तर्गत वार्षिक–पुस्तिका, अभिलेख, एकत्रित पुस्तकों की सूची, अन्तर्राष्ट्रीय शोध सारांश, मासिक पत्रिका

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

समाचार–पत्र, पत्रिकायें, समय–समय पर प्रकाशित होने वाली अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं की सूचाक आदि आते है। ये पत्रिकायें सामान्यत: पत्रिकाओं के कमरे में खुली आलमारियों में रखी जाती है। अध्ययन न्यूयार्क में प्रतिमास प्रकाशित होता है। न्यूयार्क का पुस्तकों का सूचांक अंग्रेजी और विदेशी भाषा दोनों में प्रकाशित पत्रिकाओं एवं पुस्तकों की नवीनतम के हार सूची पत्रों का निर्देशन करता है।

- **विश्व–कोश**– विश्वकोशों में विशेषज्ञों द्वारा लिखे गए विभिन्न विषयों पर संक्षिप्त सूचनायें होती है उनके अन्तर्गत सूचनाओ के अनुकूल साधन और प्राय: उद्धरण और सन्दर्भ पुस्तकें आतीं है। केवल विशेष विश्वकोशों में ज्ञान का निश्चित क्षेत्र होता है। शैक्षिक शोध का विश्वकोश न्यूयार्क में प्रत्येक दस वर्ष बाद प्रकाशित होता है। यह शैक्षिक समस्याओं पर किए गए महत्वपूर्ण कार्यों की ओर संकेत करता है।
- **पत्रावली पुस्तकें वार्षिक पुस्तकें और सहायक पुस्तकें तथा निर्देशिका**– सन्दर्भो की इन श्रेणियों के अन्तर्गत वे प्रकाशन आते है। जो दिएगए उद्देश्य से सम्बन्धित विभिन्न विषयो की नवीनतम सूचनाओं के विवरण प्रस्तुत करते है। प्राय: परिगणना सम्बन्धी प्रकृति की विशिष्ट सूचनाओं को प्राप्त करने के लिए इस प्रकार के सन्दर्भों की आवश्यकता पडती है।
- **अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा पर सान्दर्ग पुस्तकें**– इस प्रकार के प्रकाशनों में अमेरिका से बाहर की शिक्षा होती है। कोलम्बिया विश्वविद्यालय के अध्यापक–शिक्षा और लन्दन विश्वविद्यालय दोनों के द्वारा संयुक्त रूप से तैयार किये जाने पर 'शिक्षा की वार्षिक पुस्तक, न्ययार्क' प्रतिवर्ष प्रकाशित होती है, प्रत्येक भाग अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा के किसी–न–किसी पक्ष पर आधारित होता है। शिक्षाशास्त्र की अन्तर्राष्ट्रीय वार्षिक पुस्तक' नामक वार्षिक पुस्तक अमेरिका, कनाडा और 40 से अधिक विदेशी देशों में पूर्व वर्षो में विकसित शैक्षिक समीक्षा को अंग्रेजी और फ्रेंच दोनों भाषाओं में प्रस्तुत करती है।
- **विशिष्ट शब्द–कोश**– शिक्षाशास्त्र पर विशिष्ट शब्द कोश है जिनमें पद, शब्द और उनका अर्थ निहित्त है। 'शिक्षाशास्त्र का शब्द–कोश, न्यूयार्क' नामक शैक्षिक शब्द–कोश में तकनीकि और व्यावसायिक शब्द आते है। तुलनात्मक शैक्षिक लेखों में प्रयुक्त विदेशी शैक्षिक शब्द भी इसमें दिये जाते है। भारत सरकार ने भी एक शिक्षाशास्त्र का शब्द कोश तैया किया है जिसमें अंग्रेजी से हिन्दी तकनीकि और व्यावसायिक शब्द दिये गये है।
- **लघु शोध और शोध ग्रंथ**– शोध प्रबन्ध और डिजरटेशन्स, जिनमें शैक्षिक शोधों के प्रस्तुतीकरण का समावेश रहता है, संस्थाओं और विश्वविद्यालयो द्वारा रखी जाती है, जोकि इनके लेखों को पारितोषिक देती है।
- **समाचार–पत्र**– प्रचलित समाचार–पत्र शिक्षा–क्षेत्र के नये विकास, सम्मेलन, अभिलेख और भाषाओं की नवीतम सूचनायें देतें है। नवीन घटनायें और शैक्षिक समाचार भी समाचार–पत्रों में प्रकाशित होते है। यह भी साहित्य की समक्षा के महत्वपूर्ण स्रोतों में से एक है। साहित्य को देखने से शोधकर्ता ज्ञान की रागरयाओं को जान जाता है कि वह अपने क्षेत्र में कहां तक नई खोजां का मूल्यांकन कर सकता है, आवश्यकता शोधों की पहचान और विरोधाभाषा खोजों के ज्ञान के अन्तर को जान जाता है। वह उन विधियों और पुस्तकों से अवगत हो जाता है जो उसके अपने शोध मे उपयोगी हो सकती है।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

विदेशों में हुए अध्ययन

रोनल्ड (1970) ने कला 6 के निम्न एवं मध्यम सामाजिक आर्थिक स्थिति वाले बालकों का उनकी उपलब्धि के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया। इस अध्ययन में उन्होंने 600 बालको का चयन यादृच्छिक रूप से किया।

अपने अध्ययन में उन्होंने दोनों की तुलना हेतु टी सांख्यिकी का प्रयोग किया तथा पाया कि पूर्व निर्धारित 0.05 स्तर पर निम्न एवं मध्यम SES वाले मन्द बालकों की विद्यालयी उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं था।

अलविरा–बेनिटेज (1977) के द्वारा अध्ययन में पाया गया कि लिंग अध्ययन उपलब्धि एवं घरेलू वातावरा के चरो (1) घरका वातावरण (2) आर्थिक स्थिति (3) माता–पिता की शैक्षिक पृष्ठभूमि (4) बच्चे एवं माता–पिता द्वार अध्ययन अन्तर्क्रिया आदि के बीच सार्थक सम्बन्ध था।

योगेन्द्र (1980) द्वारा अध्ययन मे यह पाया गया कि घर के शैक्षिक वातावरण तथा अध्ययन उपलब्धि मे उच्च स्तर का सम्बन्धि था साथ ही रहने की स्थिति अध्ययन उपलब्धि से अधिक सहसम्बन्धी थी। माता पिता की शैक्षिक स्थिति भी अध्ययन उपलब्धि से सहसम्बन्ध थे।

भारत में हुए अध्ययन

कौर (1971) ने माता–पिता के आर्थिक एवं शैक्षिक स्तर तथा उनके बच्चों की विद्यालयी उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध ज्ञात करने हेतु अध्ययन किया है। अपने अध्ययन में उन्होंने पाया कि बच्चों की विद्यालयी उपलब्धि तथा माता–पिता की आर्थिक स्थिति के बीच उच्च आर्थिक सहसम्बन्ध था तथा निम्न उपलब्धि वाले छात्र निम्न आय समूह ने सहसम्बन्धित थे।

चन्द्र (1975) ने वाराणसी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की समस्याओं तथा उनकी विद्यालयी उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभावो का अध्ययन किया तथा पाया कि कम उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के पास उचित ड्रेस अध्ययन हेतु फर्नीचर प्रकाश तथा पुस्तकों की कमी थी। उन्हें घरेलू क्रियाओं में सहगोगी बनने के लिए दबाव डाला जाता था, उन्हें कठोर अनुशासन में रहना होता था तथा माता–पिता द्वार उचित निर्देश नहीं दिया जाता था।

शुक्ला (1984) ने अध्ययन में पाया कि–

1. प्राथमिक स्तर पर सामाजिक आर्थिक स्थिति शैक्षिक उपलब्धि से धनात्मक एव सार्थक रूप से सम्बन्धित थो।
2. उच्च सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति वर्ग के विद्यार्थी शैक्षिक उपलब्धि में मध्यम एवं निम्नतम SES वर्ग की तुलना में बेहतर सार्थक अन्तर प्रदर्शित करते थे।
3. प्राथमिक स्तर के बच्चों पर परिवार के आकार (संयुक्त/ एकांकी) शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं डालता था।

गुप्ता (1989) ने अध्ययन गें पाया कि–

1. निम्न एवं उच्च परिवार की लड़कियों की शैक्षिक उपलब्धि में पारिपारिक प्रोत्साहन का सार्थक प्रभाव नहीं था।
2. छोटे एवं बड़े परिवार की लड़ांकियों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं था।

एलक्जेण्डर (1990) ने अपने अध्ययन में पाया कि

1. कृत्रिम चिन्तन वैज्ञानिक उपलब्धि एवं SES गें उच्चतग प्राप्तांक विज्ञान की उपलब्धि के पक्ष में थे।
2. विज्ञान की उपलब्धि मे लिग भेद का प्रभाव पुरूषों के पक्ष में था।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

उपरोक्त सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के उपरान्त पाया गया कि वाराणसी जनपद के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति के परिप्रेक्ष्य में शैक्षिक उपलब्धि पर उनके प्रभाव अध्ययन नहीं किया गया है। अत: शोधकर्ता ने इस विषय से आकर्षित होकर इसे अपने लघु शोध के विषय रूप में चयनित किया।

शोध विधि एवं अभिकल्प

सामान्यतया ज्ञान का व्यवस्थित संकलन ही विज्ञान है। सिद्धान्त एवं तथ्य का जटिल सम्बन्ध ही आधुनिक विज्ञान की आधार शिला है। सिद्धान्त मात्र अनुमान ही नही बल्कि नियमों और तथ्यों का अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है। सिद्धान्त विज्ञान के उपकरण है जो भावात्मक एव व्यवहारिक प्रकार के प्रदत्तो का परिभाषित कर विज्ञान की दिशा में निर्धारित करते है।

ये सभी संकल्पनात्मक योजनाएं प्रस्तुत करते है। जिसमें सुसंगत घटनाएं व्यवस्थित वर्गीकृत एवं परस्पर आबद्ध होती है। सिद्धान्त जहां एक तरफ तथ्यों के अनुभवात्मक एवं व्यवस्थित साराश को प्रस्तुत कर हमारे ज्ञान की रिक्तता का बोध कराते हैं, तो वही दूसरी तरफ तथ्य स्वयं सिद्धान्त को उद्भूत करते है।

प्रस्तुत अध्ययन की रागरया को परिभाषित एवं निरूपित कर उसके उद्देश्य एवं परिकल्पनाओं को सुनिश्चित रूप से प्रस्तुत करने के बाद पूर्ववर्ती अध्ययनों की पृष्ठभूमि मे उन आधारो का वर्णन भी किया जा चुका है, जिसमें अध्ययन में प्रयुक्त होने वाले उपकरण एवं प्रणालियों का चयन संभव हो सका है। उसके अतिरिक्त अध्ययन के विषयगत आधार शैक्षिक तथ्यों के सैद्धान्तिक विवेचन के साथ–साथ अध्ययन में प्रयुक्त एकीकरण के उपकरणों की आन्तरिक संरचना एवं प्रकारों का भी आभास प्रस्तुत हो चुका है।

शोध अभिकल्प

प्रस्तुत शोध में कार्योत्तर शोध अभिकल्प (Ex Post Facto Design) का प्रयोग किया गया है।

शोध विधि

एक अच्छा शोध दूसरे उत्तम शोध को प्रादुर्भाव करता है। शोध का स्तर सदा स्थिर नहीं है। उत्तम स्तर का शोध निश्चित रूप से अन्य शोध स्तर को ऊंचा उठाने में ही प्रतिष्ठित होता है। मनोवैज्ञानिक विधियों का उपयोग करते है समय प्रकृति के अन्तर्निहित नियमों का भलिभाँति ज्ञान परम आवश्यक है। अत: ज्ञान की समुन्नति में सबलतम उपकरणों का समुचित उपयोग हमें करना ही है।

सर्वेक्षण विधि

प्राय: सर्वेक्षण का अर्थ एक सरकारी आलोचनात्मक निरीक्षण है, जिसका उद्देश्य एक क्षेत्र विशेष की स्थिति अथवा उसके प्रचलन के सम्बन्ध में यथार्थ सूचना प्राप्त करना है। सर्वेक्षण शोध स्वभावत: उद्गार होते हुए प्रारम्भिक स्तर पर अत्यन्त उपयोगी होते है। इसके अतिरिक्त सर्वेक्षण शोध प्रस्तावित विचलनों के साथ अन्य विचलनों के सार्थक सम्बन्धों की सामान्य समस्या को भी स्पष्ट करते है। इसीलिए प्रस्तुत अध्ययन में "सर्वेक्षण विधि" का प्रयोग किया गया है।

समग्र

समष्टि प्रयोज्यों या विशेषताओं या संभावनाओं का निर्दिष्ट समूह है यह एक समुचित परिभाषित समूह है जिसके लिए अनुसंधानकर्ता विस्तृत रूप से अध्ययन करना चाहता है।

समष्टि सम्पूर्ण इकाईयों का वह योग है जो किसी निर्धारित विशिष्टताओ के समुच्चय से सम्बन्धित होता है।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-401X**

प्रस्तुत अध्ययन में वाराणसी जनपद में सी0बी0एस0ई0 व माध्यमिक शिक्षा परिषद, उ0प्र0 द्वारा संचालित सभी सरकारी व गैर सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा–10 के छात्र व छात्राओं को समग्र के रूप में लिया गया है।

प्रतिदर्श एवं प्रतिदर्श चयन विधि

सामान्यतया सम्पूर्ण अध्ययन के जिस संख्या पर कोई शोध अध्ययन आधारित होता है समष्टि का प्रतिदर्श कहा जाता है। प्रतिदर्श का यहां तात्पर्य यह है कि जिस संख्या पर इस अध्ययन का परिणाम प्राप्त किया गया है यदि वही अध्ययन उन्हीं दशाओं में अनिश्चित काल तक बार–बार किया जाय तो वैसा ही परिणाम प्राप्त होगा। इस लघु शोध–प्रबन्ध के प्रतिदर्श के चयन के लिए सर्वप्रथम डी0 आई0 ओ0 एस0 कार्यालय से प्राप्त विद्यालयों की सूची में वाराणसी जिले के नगरीय एवं ग्रामीण विद्यालयों के नामों की पर्चियां बना ली तथा दोनों को अलग–अलग डिब्बे में रखा गया। प्रत्येक डिब्बे से चार–चार पर्चियां निकाली गयी। इस प्रकार पांच ग्रामीण एवं पांच शहरी विद्यालयों का चयन किया गया है।

चुने गये दस विद्यालयों से घटना परक उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन विधि द्वारा जो छात्र एवं छात्राएं विद्यालयों में मिले उनसे सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति सूचकांक में सूचनाओं को अंकित करवा लिया गया। ग्रामीण क्षेत्र एवं नगरीय क्षेत्र के विद्यालयों से 50–50 विद्यार्थी चुने गये।

शोध उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया–

व्यक्तिगत सूचना प्रपत्र

इस प्रपत्र में विद्यार्थियों के नाम, आयु, लिंग एवं माता–पिता के जीवित मृत होने की जानकारी, अभिभावक, अध्ययन कार्य में छात्रकोटि, जाति समूह पारिवारिक संरचना, धर्म जन्मक्रम भाई बहनों की संख्या विद्यालय के प्रकार विषय वर्ग एवं विद्यार्थियों के प्राप्तांक से सम्बन्धित सूचनाओं हेतु स्थान दिये गये है। यह प्रपत्र परिशिष्ट 1 और 2 के साथ संलग्न है।

सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति मापनी

डा0 बी0 के0 सिंह तथा सुप्रीति सुमन द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत इस मापनी का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों से सम्बद्ध विद्यार्थियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति ज्ञात करना था। इस मापनी में कुल 25 वस्तुनिष्ठ प्रश्न थे, जो विद्यार्थियों के पिता के व्यवसाय, व्यवसाय की सामाजिक प्रतिष्ठा, माता–पिता का शिक्षा स्तर, आय, जमीन, सिचाई की व्यवस्था, कृषि के उपकरण, पालतू पशु, मकान के प्रकार, घरेलू सुविधाएं, जातीय महत्व, परिवहन के साधन, रिश्तेदारों का स्तर, अस्त्र–शस्त्र, पत्र–पत्रिकाएं आदि सूचनाओं से सम्बन्धि थे। इसकी विश्वसनीयता गुणांक (छत्र 100 से 150) परीक्षण–पुर्नपरीक्षण विधि से 0.89–0.94 तथा सम विषम विधि (स्पीयर मैन–ब्राउन सूत्र से) 0.85–0.92 था। इसकी समवर्ती वैधता (ब्वद. ब्नततमदज टंसपकपजतल) (छत्र 100 से 130) रो 0.22–0.27 थी। यह मापनी परिशिष्ट–1 में संलग्न है।

सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति मापनी

डा0 बी0 के0 सिंह एवं सावित्री शर्मा द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत इस मापनी का उद्देश्य शहरी क्षेत्रों से सम्बद्ध विद्यार्थियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति का ज्ञान करना था।इस मापनी में कुल 25 वस्तुनिष्ठ प्रश्न थे, जो विद्यार्थियों के पिता के व्यवसाय एवं उस व्यवसाय की समाज में प्रतिष्ठा माता पिता की शिक्षा का स्तर, उनकी आय, मकान, घरेलू सुविधाएं, परिवहन के साधन, अस्त्र–शस्त्र पत्र–पत्रिकाए आदि से सम्बन्धित

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

थे। इस मापनी का विश्वसनीयता गुणांक (छत्र 100 से 150) परीक्षण–पुनर्परीक्षण विधि से 0.89–94 तथा सम विषम विधि (स्पीयर मैन ब्राउन सूत्र से) 0.85–0.92 था। इसकी समवर्ती वैद्यता (छत्र 100 से 130) 0.24 से 0.27 थी।

उपकरण का प्रशासन

प्रयुक्त प्रतिचयन विधियों द्वारा चयनित प्रतिदर्श के प्रत्येक इकाई से अनौपचारिक बातें करके तारतम्य स्थापित किया गया। तत्पश्चात प्रयोज्यों को सामाजिक–आर्थिक सूचकांक प्रदान किया गया। सर्वप्रथम प्रयोज्यों को मौखिक निर्देश दिया गया साथ ही मापनी पर अंकित निर्देश को ध्यान पूर्वक पढ़ने को कहा गया। प्रयोज्यों द्वारा सूचनाओं के अंकित कर देने के बाद मापनियों को एकत्र कर लिया गया।

प्रदत्तों का संकलन

मापनी का प्रयोग करके विद्यार्थियों की सामाजिक स्थिति एवं अन्य सूचनाएं प्राप्त की गयी। अध्ययन के लिए 10वीं कक्षा में पढ़ रहे विद्यार्थियों को चुना गया।

प्रदत्तों का फलांकन, संकलन, सारणीयन एवं सांख्यिकीय विश्लेषण

प्रदत्तो का संकलनः– प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता वाराणसी जनपद के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मे कक्षा 10 के अध्ययन के कर रहे विद्यार्थियों को लिया है। शोधकर्ता वाराणसी जनपद के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में गया और वहाँ उपस्थित प्रधानाचार्य का आदेश प्राप्त कर विद्यालयों मे स्थित शिक्षकों की सहायता से 100 विद्यालयों मे से रैण्डम प्रतिदर्श चयन विधि द्वारा अपने उद्देश्य के आधार पर शहरी क्षेत्र के 3 सरकारी, 2 अर्द्धसरकारी / प्राइवेट तथा ग्रामीण क्षेत्र के 3 सरकारी तथा 2 अर्द्धसरकारी / प्राइवेट विद्यालयों का चयन किया गया है। चयनित विद्यालयों मे से उसी प्रक्रिया द्वारा अपनी सुविधा अनुसार 10–10 विद्यार्थी चयन कर लिये तत्पश्चात चयनित विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत होकर प्रस्तुत शोध मापनी प्रश्नावली प्रस्तुत कराये और उनको भरने के लिये दिया गया फिर छात्रो ने प्रस्तुत शोध में मे दिये सामाजिक आर्थिक मापनी को पुर्ण रूप मे भरा जो उनकी समझ में आया भरे अन्यथा अपने गुरू की मदद लेकर उस मापनी को भरने मे सहयोग किया है।

फिर छात्रो द्वारा प्राप्त भरा गया मापनी हम अध्ययन किये तत्पश्चात् SES मापनी में दिये गये निर्देशों के आधार पर प्रश्नावली की हल कर उनका अंकन किया गया फिर अपने शोध के शिर्षक के अनुसार छात्रो की शैक्षिक उपलब्धि को विद्यार्थियों की चरो के अनुसार प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन किया गया।

शोध के अध्ययन करते समय काफी परेशानियाँ भी आयी जिसमे वाराणसी जिले के विद्यालयों मे ऐसे भी प्रधानाचार्य एवं शिक्षक सम्पर्क मे आये जो न तो मदद करने समर्थ थे और न ही अपने विद्यालय की व्यवस्था को अच्छे चला जा रहे थे। जिससे हमे आकड़ा इकठ्ठा करने में कठिनाई में उत्पत्न हो रही थी। फिर भी धीरे–धीरे उनको अपनी योग्यता एवं क्षमता को दिखा कर उन्हे अपने सहयोग मे शामिल मे कर लिये। और उनकी मदद से शोध की प्रक्रिया की सुचारू ढंग से आगे बढ़ाने मे मदद लिये।

शोध का उपकरणः– प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने शोध में व्यक्तिगत सुचना प्रपत्र जिसमे विद्यार्थियों के नाम आयु लिंग, जाति, माता पिता के जीवित मृत होने की जानकारी अभिभावक, अध्ययन कार्य मे छात्रकोटि, जाति समूह पारिवारिक संरचना, धर्म, जन्मक्रम, भाइ–बहनों की संख्या, विद्यालय के प्रकार विषय को एवं विद्यार्थियों से सम्बन्धित

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

सूचनाओं हेतु स्थान दिये गये है। तथा डॉ0 बी0 के0 सिंह और सुप्रीति सुमन द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति ग्रामीण क्षेत्र और डॉ0 बी0के0 सिंह एवं सावित्री शर्मा द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति मापनी शहरी क्षेत्र के लिये प्रयोग ने लिये गये है।

प्रदत्तो का फलांकन :– दिगे गये के अनुसार प्रस्तुत शोध में प्राप्त वाराणसी जनप्द के उच्चतर माध्यामिक विद्यालयों मे अध्ययनरत कक्षा 10 के विद्यार्थियों का जाति, परिवार विद्यालय निवास स्थान, धर्म, सामाजिक आर्थिक स्थिति के परिप्रेक्ष्य मे शैक्षिक उपलब्धि–

सारणीयन

किसी अध्ययन द्वारा प्राप्त आकड़ो का तब तक कोई सार्थक महत्व नहीं होता है जब तक कि उनका सांख्यिकीय विश्लेषण न किया जाय। अत: प्रदत्तो को अर्थपूर्ण बनाने हेतु सर्वप्रथम यह आवश्यक है कि आँकड़ों का एक निश्चित क्रम मे प्रदर्शित किया जाय, जिससे आँकड़ों के विषय मे आसानी से जाना जा सके। इसके लिए केन्द्रीय प्रवृत्ति के मानो एवं विभिन्न आकड़ो की प्रतिशत के रूप में व्यवस्थित किया जाता है।

शोधकर्ता ने सानाजिक आर्थिक प्रस्थिति के प्राप्ताको की गणना करके मैनुअल की सहायता से प्रतिदर्शो को तीन भागो मे वर्गिकृत किया है। इसके अतिरिक्त शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांको के आधार पर जनसंख्या को तीन वर्गो मे विभाजित किया जाता है। इसके साथ ही तीन चरों के आधार पर आकड़ों को सरचित करने का प्रयास किया गया है। अध्ययन क्षेत्र से चुने गये प्रतिदर्शो के आधार पर प्राप्त आकड़ो को नीचे विभिन्न सारिणी मे दिखाया गया है। जिसकी गणना उपर्युक्त SPSS प्रणाली द्वारा की गयी है।

परिणाम, तुलना एवं व्याख्या, सारांश, शैक्षिक निहितार्थ, भावी शोध हेतु सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन का शैक्षिक उद्देश्य सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति का विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाला प्रभाव का अध्ययन करना था इसके साथ ही लैंगिक भिन्नता, निवास स्थान की भिन्नता अध्ययन विषय वर्ग परिवार के प्रकार का शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वालों प्रभाव का अध्ययन करना प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य था।

प्रस्तुत अध्ययन में निर्धारित उद्देश्यों की जांच प्रासांगिक शून्य परिकल्पनाओं के आधार पर किया गया है परिणानों की वैज्ञानिकता एवं वस्तुनिष्ठता बनाये रखने के लिये तकनीकी तौर पर विभिन्न शब्दों को परिभाषित किया गया। प्राप्त प्राप्तांकों के मध्यमानों की सार्थकता ज्ञात करने के लिये ही टी परीक्षण, एनोवा परीक्षण (f test) इत्यादि सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया, जिसके फलस्वरूप परिणाम ज्ञात हुए।

शोध का परिणाम एवं तुलना

- वाराणसी जनपद के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सामाजिक आर्थिक परिस्थिति के आधार पर सार्थक अन्तर है सामान्यत: जिन विद्यार्थियों की सामाजिक, आर्थिक स्थिति उच्च है उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च होने की प्रवृत्ति पायी गई है तथा जिन विद्यार्थियों की सामाजिक, आर्थिक स्थिति निम्न है उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी निम्न पायी गई है। अर्थात् विद्यार्थियो को शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक आर्थिक स्थिति का प्रभाव पडता है।
- वाराणसी जनपद के उच्चतर माध्यामिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि मे लिंग के आधार पर सार्थक अन्तर पाया गया है। लैंगिक विषकता के

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

कारण छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर देखने को मिलता है इसका कारण यह है कि परिवार में अधिकतर छात्राओं को शिक्षा सुविधाओं पर उतना ध्यान नहीं है जितना छात्रो पर ये कुरितियाँ ही इस सार्थक अन्तर का कारण है।

- परिवार के प्रकार के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि मे अन्तर देखने की प्रवृत्ति पायी गयी है संयुक्त परिगर के विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि एकल परिवार के शैक्षिक उपलब्धि की तुलना मे कम पायी गयी। इसका कारण यह हो सकता है संयुक्त परिवरा की आर्थिक स्थिति सही न हो सकती है जिसके वजह से सयुक्त परिवार के बालको को उक्त सुविधा प्राप्त न हो पाती है।
- निवास स्थान के आधार पर विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि मे अन्तर देखने प्रवृत्ति पायी गयी है। ग्रामीण विद्यार्थियों के पास उक्त शिक्षा के साधन की कमी के वजह वहाँ के छात्र शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त कर सकने मे असफल रह रहे है। और हमारी सकरार उन छात्रो के लिये जो सुविधाये उपलब्ध कराती है या तो वे उनतक पहुच नही पाती है या तो उनके विद्यालय के कार्य कर्ता पहुचने नहीं देते है। जिसकी वजह से यह अन्तर देखने की मिलती है।
- धार्मिक स्थिति के आधार पर विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर पायी जाती है। हिन्दु धर्म की शैक्षिक उपलब्धि मुस्लिम धर्म के लोगो की तुलना मे अधिक है। क्योंकि हमारे यहां हो सकता है मुस्लिम धर्म की विद्यार्थी उतना रुचि शिक्षा ग्रहण करने में नहीं लेते है जिस वजह से उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पायी गयी।
- विषय वर्ग के आधार पर विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि मे अन्तर देखने को मिला है। विज्ञान वर्ग के छात्रो को कि शैक्षिक उपलब्धि सर्वाधिक है जबकि कला वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि सबसे कम है। जबकि कामर्स वर्ग विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि कला वर्ग से अधिक और विज्ञान की से कम है।
- विद्यालय के प्रकार के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि पर भी प्रभाव पड़ता है सरकारी विद्यालयों की तुलना में प्राइवेट विद्यालयों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक है प्राइवेट विद्यालयों में शिक्षा की हर सुविधा प्राप्त होता है और हो सकता है कि सरकारी स्कूलों में छात्रों को हर शिक्षा की सुविधा न प्राप्त होता है जिसके वजह से उनकी शैक्षिक उपलब्धि में इतनी कमी पायी गयी है।

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति का विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना था। इसके साथ ही लैंगिक भिन्नता, निवास स्थान की भिन्न्ता, अध्ययन का विषय वर्ग परिवार के प्रकार का शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य था।

प्रस्तुत अध्ययन में निर्धारित उद्देश्यों की जाँच प्रासंगिक शून्य परिकल्पनाओं के आधार पर किया जाता है। परिणामों की वैज्ञानिकता एवं वस्तुनिष्ठता बनाये रखने के लिए तकनीकी तौर पर विभिन्न शब्दों को परिभाषित किय गया। प्राप्त प्राप्ताकों के मध्यमानों की सार्थकता ज्ञात करने के लिए ही ज परीक्षण, एनोवा परीक्षण इत्यादि सांख्यिकी का प्रयोग प्रचलित SPSS प्रणाली द्वारा किया गया है।

- सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

सार्थक सम्बन्ध है। जिन विद्यार्थियों की सामाजिक आर्थिक आर्थिक स्थिति उच्च है उनको शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च होने की प्रवृत्ति पायी गई है।

- लैंगिक विषमता के कारण छात्र–छात्रओं की शैक्षिक उपलिब्ध में अन्तर देखने को मिला है इसका कारण यह है कि परिवार में अधिकतर छात्राओं को शिक्षा सुविधाओं पर उतना ध्यान नहीं है जितना छात्रो पर ये कुरितियाँ ही इस सार्थक अन्तर का कारण हो सकती है।
- परिवार के प्रकार के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर देखने को मिलता है संयुक्त परिवार के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एकल परिवार के विद्यार्थियों की तुलना में कम है।
- निवास के स्थान के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि मे अन्तर देखने की प्रवृत्ति पायी जाती है। ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक पायी गई है।
- धर्म के आधार पर विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर पायी जाती है। हिन्दू धर्म के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि मुस्लिम वर्ग के लोगों की तुलना में अधिक पायी गई है।
- विषय वर्ग के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया जाता है। विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि सर्वाधिक है जबकि कला वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि सबसे कम पायी गई है। जबकि कामर्स वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि कला वर्ग से अधिक एवं विज्ञान वर्ग के कम पायो गई है।
- विद्यालय के प्रकार का विद्यार्थियो के शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है सरकारी विद्यालयों की तुलना मे प्राइवेट विद्यालयों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक पायी गई है।

शैक्षिक निहितार्थ

अध्ययन के परिणामों के आधार पर निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि सामाजिक आथ्रिक प्रस्थिति विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाला सबसे महत्वपूर्ण कारक है। सामाजिक आर्थिक कारक के रूप में परिवार के लोगों की शिक्षा उनके महत्वाकांक्षा उनके द्वारा उपयोग में लाई जाने वाली सामग्री उनकी पृष्ठभूमि आदि समग्र रूप से अधिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं।

आर्थिक कारक शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है। शिक्षा व्यक्ति की मूलभूत जैविक आवश्यकता नहीं है। कोई भी व्यक्ति अपने बच्चों को शिक्षा प्रदान करने की तभी सोच सकता है जब उसकी मूलभूत जैविक आवश्यकताएं पूरी होती है। जब तक हमारे सिर पर छत नहीं है तब तक हम अन्य महत्वपूर्ण पक्षों के बारे में सोच भी नहीं सकते है। और सोचते भी हैं तो छोटा सा घर और पढ़ाई के डर की मनोवृत्ति के साथ जो निश्चित रूप से शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावि करती है।

प्रस्तुत अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर नहीं है। इसका सम्भावित कारण यह हो सकता है कि अब लोग लड़कियों की शिक्षा को लड़कों के समान महत्व देने लगे है। जाति समूह के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर देखने को मिलती है क्योकि जातीय संरचना भारतीय सामाजिक व्यवस्था का आधार रहा है। जो लोग तथाकथित उच्च जाति के हैं उनकी आर्थिक स्थिति भी सामान्यतः उच्च होती है इसके साथ ही उनकी पारिवारिक एवं सास्कृतिक परम्परा में शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

है, जबकि जो लोग निम्न जाति वर्ग के है उनके पारिवारिक पृष्ठभूमि में शिक्षा नई चीज है, उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि इसी तरह की होती है जिसमें यदि वे शिक्षा के क्षेत्र में अच्छा प्रदर्शन करना चाहे तो भी अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि के कारण वैसा नहीं कर पाते है।

एकल परिवार के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि संयुक्त परिवार की तुलना में बेहतर है। जिसका कारण यह हो सकता है कि एकल परिवार मे बच्चो की शिक्षा पर उनके माता–पिता का निर्णय प्रिभावी होता है, वे अपने बच्चों की शिक्षा के लिए प्रयास करते है। जबकि संयुक्त परिवार में बच्चों की शिक्षा का निर्णय परिवार में मालिक पर छोड़ दिया जाता है। संयुक्त परिवार में बच्चों की शिक्षा को लेकर खींचातानी चलती रहती है।

निवास स्थान शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है। शहरी क्षेत्रों मे शिक्षा के अच्छे साधन उपलब्ध है, वहाँ पर्याप्त संख्या मे, विद्यालय एवं शिक्षा के अन्य साधन उपलब्ध है जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के पर्याप्त साधन उपलब्ध नहीं है। इसके साथ ही ग्रामीण लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है, जिससे वे उतना अधिक आय नहीं प्राप्त कर पाते जिससे वे अपने बच्चों को उचित शिक्षा प्रदान कर सके। इसके साथ ही बच्चों को खेतों में काम करना पड़ता है। जिससे पढ़ाई के लिए कम समय मिल पाता है। इन सभी कारकों का प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है।

हिन्दू धर्म के विद्यार्थियों की तुलना में मुस्लिम धर्म के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि कम हैं जिसका प्रमुख कारण है मुस्लिम धर्म के लोगों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का निम्न होना। इसके अतिरिक्त मुस्लिम लोगों की शैक्षिक पृष्ठभूमि भी तुलनात्मक रूप से कमजोर पायी गयी है। उनकी जनसंख्या वृद्धि दर अधिक होने एवं आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण वे बच्चों के शिक्षा का उचित इन्तजाम नहीं कर पाते है तथा बच्चों को बचपन से ही काम में लग जाना पड़ता है। इन सभी कारणों का प्रभाव मुस्लिम बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है।

विषय वर्ग के साथ शैक्षिक उपलब्धि सार्थक रूप से सम्बन्धित है जिसका सम्भावित कारण है कि विषय वर्ग के चयन में यह देखा जाता है। जिन बच्चों की पढ़ाई में अच्छी स्थिति होती है वे विज्ञान वर्ग की चयन करते है जबकि निम्न शैक्षिक स्थिति वाले विद्यार्थी कला वर्ग का चयन करते है।

विद्यालय का प्रकार शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है। सरकारी विद्यालय के शिक्षक एवं कर्मचारियों पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि कम या अधिक होने से कोई अन्तर नहीं पड़ता है। सरकार भी इन विद्यालयों के गुणवत्ता के सुधार के लिए प्रयास करती है। जबकि प्राइवेट विद्यालयों में प्रतिस्पर्द्धा होती है कि उनके विद्यालय मे अधिक बच्चें पढ़े, जिससे वे अधिक लाभ कमा सकें इसके लिए शिक्षा की गुणवत्ता के लिए प्रयास करते है। इस प्रकार जो अभिभावक अपने बच्चों को महत्व देते है तथा आर्थिक स्थिति ठीक है वे अपने बच्चों को निजी विद्यालयों मे भेजते है।

शोध हेतु सुझाव

- चूँकि प्रस्तुत शोध, लघु शोध है और छोटे प्रतिदर्श पर किया गया है अतः इसे बड़े क्षेत्र व बड़े प्रतिदर्श पर किया जाना चाहिए।
- इस विषय से सम्बन्धित अध्ययन अन्य चरों के आधार पर किये जा सकते हैं।
- प्रस्तुत अध्ययन मे भौगोलिक, राजनीतिक एवं धार्मिक कारणों को भी शामिल किया जा सकता है।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

- प्रस्तुत अध्ययन को वाराणसी के अलावा हर जिलों में भी करना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. पाण्डेय, के0 पी0 (2003): शैक्षिक अनुसंधान, प्रकाशक विश्वविद्यालय प्रकाशन चौक, वाराणसी–221001, तृतीय संस्कारण।

[2]. पाण्डेय के0 पी0 (2007): शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी, प्रकाशक विद्यालय प्रकाशन चौक, वाराणसी 221001, सप्तम संस्करण।

[3]. कपिल, एच0 के0 (2008): सांख्यिकीय के मूल तत्व (सामाजिक विज्ञानों में), प्रकाशन अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा–7, अष्टम संस्करण।

[4]. लाल रनन बिहारी: भारतीय शिक्षा का इतिहास और उसकी समस्याएं।

[5]. पाठक, पी0डी0 (2007): भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याए प्रकाशक विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा–2, इक्कीसवाँ संस्करण।

[6]. पाण्डेय, के0पी0 (1999): भारतीय शिक्षा की समाचाये वर्तमान सन्दर्भ, प्रकाशक अभताभ, द्वितीय संस्करण।

[7]. उपाध्याय, प्रतिभा: भारतीय शिक्षा में उद्दीयमान प्रवृत्तियाँ प्रकाशक शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

[8]. कुइ, दिवाकर: द फर्स्ट रिसर्च सर्वे इन एजुकेशन वोल्यूम–1 एवड वोल्यम–2 पेज–24।

[9]. बुच, एम0वी0 (1978–83): थर्ड सर्वे आफ रिसर्चइन एजुकेशन (NCERT) न्यू देहली 1978–1983 पेज–100।

[10]. नाथ, योगेन्द्र (2002): ग्रामीण क्षेत्रों में बालिकाओं के विक्षा से विरत होने के कारणों का अध्ययन। लघुशोध प्रबन्ध, काशी विद्यापीठ विद्यालय।

[11]. सिंह ज्योत्सना: माध्यमिक विद्यालयों की उच्च वर्ग और निम्न वर्ग की बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओ का तुलनात्मक अध्ययन। लघुशोध प्रबन्ध काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय।

© Eureka Journals 2018. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X